ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

चित्रकूट धाम जनपद में महिलाओं की साक्षरता स्थिति एक भौगोलिक अध्ययन

दिव्यानी पाठक* अंजनी द्विवेदी **

**सहायक प्राध्यापक भूगोल , एस.आर.एस. पी.जी. कालेज, नरैनी बॉदा (उत्तर प्रदेश)*

***सहायक प्राध्यापक भूगोल , एस.आर.एस. पी.जी. कालेज, नरैनी बॉदा (उत्तर प्रदेश)*

सरांश

शिक्षा मानव जाति का सबसे महत्वपूर्ण अंग है। शिक्षा से मानव की वांक्षनीय लक्ष्यों की पूर्ति का माध्यम भी है। शिक्षा से ही मानव जैव समूह का सबसे बुद्धिमान प्राणी बना और विकास की इस पराकाश्ठा पर पहुॅच सका। शिक्षित व्यक्ति कितना ही कुरूप क्यों न हो यदि वह शिक्षित है तो वह संसार का सबसे सुन्दर व्यक्ति है। संसार में यह f" ाक्षा दो भागों में विभक्त है एक तो पुरूश रूप में तो दूसरी महिला रूप में इन दोनों में शिक्षा सबसे अधिक पुरूश के पास पहुॅच सकी है। संसार एक कुल संख्या की आधी संख्या पर महिला का भी हिस्सा है, इस लिए यह और भी आव" यक है कि प्रत्येक भू–क्षेत्र पर वासित महिला की साक्षर स्थिति क्या है, और क्या होनी चाहिए। क्योकि महिला स" ाक्तीकरण का यह एक भुलभ माध्यम भी है, जो नई महिला समाज व्यवस्था के निमार्ण के लिए आव" यक है। सन् 1922 से 1997 तक के दौर में समाज सुधारकों और महात्मा गांधी द्वारा संचालित आन्दोलनों में लड़कियों को लड़को के समान समझने की भावना का विकास हुआ। इस प्रकार भी महिला शिक्षा का प्रादुर्भाव वर्तमान समाज की आव" यकता बन सकी।

साक्षरता मानव समाज की एक गुणात्मक विशेषता है इसके अभाव में जनसंख्या का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता। यह महिला के लिए आवश्यक है, जो महिला स" ाक्तिकरण का आधार भी प्रस्सत करता है। यह किसी क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक विकास का एक विश्वसनीय सूचकांक है।[प] इसका उत्पादकता, मृत्युता, उर्वरता, संसाधन संरक्षण तथा व्यवसाय आदि पर अधिक प्रभाव पड़ता है। अतः मानव संसाधन के विश्लेषण में इसका अध्ययन अपरिहार्य है।

साक्षरता को परिभाषित करना कठिन है, क्योंकि विश्व के विभिन्न भागों में इसके निर्धारण में विभिन्न मापदण्ड प्रयोग में लाये जाते हैं। भारतवर्ष में 1951 में साक्षर व्यक्ति का तात्पर्य 4 वर्ष से ऊपर आयु वाले ऐसे व्यक्ति से है जो कम से कम साधारण पत्र पढ़–लिख सके। कुछ राष्ट्रों के विद्यालयों में अध्ययन की अवधि को साक्षरता का आधार माना जाता है। जी.टी. ट्रीवार्था के अनुसार 'अपने देश की भाषा में अपने नाम को लिख पढ़ लेने को साक्षर कहते हैं।' संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार 'साक्षरता का तात्पर्य अपने दैनिक जीवन में साधारण कथन को समझ लेने के साथ–साथ उसको पढ़–लिख लेने की योग्यता रखने से है।' भारत में सन् 1991 की जनगणना में 7 वर्ष से कम आयु के बच्चों को निरक्षर माना गया है।

साक्षरता से तात्पर्य जनसंख्या के ऐसे वर्ग से लगाया जाता है, जो एक अथवा एक से अधिक भाषा में अपने विचार लिखकर व्यक्त कर सके तथा लिखे हुए को पढ़कर समझ सके। भारतीय जनगणना निर्देशिका (1981) में किसी भी भाषा में पत्र लिखने एवं उसका उत्तर पढ़ने की योग्यता को साक्षरता का मापदण्ड माना गया है। संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कमीशन (1974) ने किसी भाषा में साधारण संदेश को समझना साक्षरता कहलाता है। अध्ययनगत जनपद में जनसंख्या की साक्षरता का प्रति" ात एवं महिला साक्षरता निम्न सारणी में दिखाया गया है–

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

सारणी संख्या 1 जनपद में जनसंख्या की साक्षरता का प्रतिशत

जनगणना वर्श– 2011	कुल जनसंख्या	कुल साक्षर पुरूश	कुल पुरूश संख्या का प्रति" ात	कुल साक्षर महिला	कुल महिला संख्या का प्रति" ात
चित्रकूट धाम कर्वी	247499	82684	62.57	47422	41.10
मऊ	161370	53663	62.76	34487	45.15
रामनगर	106949	34133	59.89	20121	40.27
पहाड़ि	205504	67839	61.87	39775	41.00
मानिकपुर	174043	55236	59.38	32430	40.00

स्रोत जिला सांख्यकिय पत्रिका 2014

उपरोक्त सारणी से स्पश्ट है कि जनपद में साक्षरता पुरूश कि अपेक्षा महिलाएं कम ही साक्षर हैं। साक्षरता में चित्रकूट धाम कर्वी विकासखण्ड़ जो एक नगरपालिका भी जहॉ पर महिला साक्षरता 41ण्10ः जब कि मऊ एक टाउन एरिया है जहॉ पर महिला साक्षरता 45ण्15ः जनपद में सबसे कम महिला साक्षरता विकास खण्ड़ मानिकपुर में है जहॉ पर महिला साक्षरता मात्र 40ण्00ः जो अत्यन्त कम ही है। मानिकपुर विकासखण्ड़ एक नगरीय क्षेत्र हैं लेकिन यहॉ दस्यू प्रभावित क्षेत्र होने के कारण भी यहॉ महिलाओं की स्थिति ठीक नहीं है। उपरोक्त भोध पत्र महिला साक्षरता की स्थिति को व्यक्त करता है, जनपद में लड़कियों के सन्दर्भ में प्रचलित सांस्कृतिक प्रभावों तथा घरेलू कार्यो व प्रजनन की स्थिति में महिला f" ाक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

i. Chandra, R.C. & Sidhu, M.S. (1980), "Introduction Population Geography", Kalyani Publishers, Ludhiana, p. 96.

ii. Pokshishevsky, V.V. (1978), "Population Distribution in D.I. Valenty (ed.), "The Theory of Populations, Progress Publishers, Moscow, pp. 70-83.

iii. Trewartha, G.T. (1953), "Population Distribution" in "A Case for Population geography", A.A.A.G., Vol. 43, pp. 71-97.

iv. जिला साख्यकीय पत्रिका 20014